श्री राम नाईक के मराठी लेखसंग्रह ''चरैवेति चरैवेति'' के हिन्दी, गुजराती व उर्दू भाषानुवाद का माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा विमोचन किए जाने के सुवअसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

1. आज उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी के मराठी में लिखे संस्मरणों का संग्रह ''चरैवेति चरैवेति'' के हिन्दी, गुजराती व उर्दू भाषानुवाद के विमोचन के अवसर पर आप सबके बीच आकर मैं गौरवान्वित हूँ। आदरणीय राष्ट्रपति जी यहां उपस्थित हैं जो स्वयं भारतीय राजनीति के देदीप्यमान नक्षत्र हैं एवं स्वयं में एक प्रेरणापुंज हैं। यहां पर माननीय उपराष्ट्रपति जी, वेंकैया जी एवं वरिष्ठ नेता शरद पवार जी जैसे गण्यमान्य व्यक्ति भी उपस्थित हैं जो अपनी कर्मठता, समाज सेवा एवं राजनीतिक कौशल के लिए जाने जाते हैं।

2. भारतीय राजनीति में राम नाईक आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। 82 वर्ष की आयु में आज भी वे उतने ही सक्रिय हैं एवं उनकी ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और साफगोई उनके कर्तृत्व से साफ–साफ झलकता है। उनका प्रखर व ओजस्वी व्यक्तित्व, समर्पित जीवन, उनके उच्च जीवन आदर्श व सरल रहन–सहन हम सब के लिए प्रेरणादायी है।

3. आदरणीय नाईक जी के इस संस्मरण का नाम ''चरैवेति चरैवेति'' बहुत ही प्रासंगिक एवं उपयुक्त है। इसका अर्थ है सदैव आगे बढ़ते चलो। यह हमें कर्म भाव की प्रेरणा देता है। उनकी किताब में जीवन के ऐसे कई प्रसंगों का विवरण है जिनसे पता चलता है कि उन्होंने अपनी मेहनत, बुद्धिमता, संघर्षशीलता, निष्ठा, दृढ़निश्चय एवं अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहने इत्यादि गुणों से कठिन अवसरों का न केवल सामना किया बल्कि संघर्ष में तपकर वे लगातार आगे बढ़ते रहे और नित नई ऊंचाइयों को प्राप्त करते रहे। वे किसी भी परिस्थिति में cool, calm और composed बने रहे चाहे जीविका का संघर्ष हो या जीवन का संघर्ष। हर संघर्ष को सफलतापूर्वक उन्होंने सुअवसर में बदल दिया। अतः,

उनके पुस्तक का नाम बहुत उपयुक्त है। इस पुस्तक के माध्यम से उनके द्वारा संचित अनुभव आम जनता एवं पाठकों तक पहुंच रही है।

4. अग्निपथ पर चलते हुए श्री राम नाईक जी ने सदैव एक आदर्श जीवन जिया है। उन झंझावातों को भी सहा है, उन पथरीले सड़कों पर तन्हां लम्बा सफर तय किया है, परंतु उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी। सार्वजनिक जीवन में चुनाव में कभी उन्होंने जीत हासिल की तो कभी पराजय भी देखनी पड़ी। लेकिन हर परिस्थिति में उन्होंने अपना मनोबल ऊंचा रखा एवं और अधिक ऊर्जा एवं मनोयोग से जनता की सेवा के कार्य को निरंतर जारी रखा। पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल जी की यह कविता राम नाईक जी के लिए प्रेरणा और सम्बल दोनों हैं:–

''क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
कर्त्तव्य पथ पर जो भी मिला
यह भी सही वो भी सही।''

अपनी लगन, धैर्य, हिम्मत एवं दुर्लभ आत्मबल के सहारे उन्होंने कैंसर जैसे रोग को भी परास्त कर दिया। यह उनकी जीवटता का उदाहरण है। वर्तमान में वे समाज सेवा के सुपथ पर निरंतर चलते हुए अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वे सर्वदा प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय हैं। माननीय अटल जी ने उन्हें यह भी कहा था कि आपका पुनर्जन्म जनता की सेवा के लिए ही है।

5. श्री नाईक जी के साथ संगठन एवं सरकार में मुझे कार्य करने का अवसर मिला। आदरणीय अटल जी की सरकार में मेरे वरिष्ठ सहयोगी के रूप में उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया। उनकी संगठन क्षमता अद्भुत है। वे बहुत meticulous और systematic हैं। यह उनकी बड़ी खुबी है। He has a knack for details. वे बहुत बारीकी से चीजों को पढ़ते–समझते एवं चिन्तन करते हैं। वे जितने विनम्र और मेहनती हैं, उतने ही समय के

पाबंद एवं नियमबद्ध हैं। जो कोई भी इनसे जुड़ता है वह इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है।

6. श्री राम नाईक बोरीवली विधान सभा से तीन बार लगातार विधायक चुने गए। उसके बाद उत्तर मुम्बई लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से पांच बार लगातार सांसद चुने गए। उनकी मेहनत, लगन, दृढ़संकल्प और कार्यक्षमता के सभी सानी हैं। जब वे विधायक अथवा सांसद थे तब वे निरंतर अपनी जनता से सम्पर्क एवं संवाद कायम रखते थे। अपने क्षेत्र की जनता को अपने द्वारा किए हुए कार्यों का ब्योरा देने के उद्देश्य से वे हर साल अपने द्वारा किए गए कार्यों का ब्यौरा ''अपने वार्षिक प्रतिवेदन'' के रूप में प्रस्तुत किया करते थे ताकि जनता को उनके द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी मिल सके। उन्होंने यह परम्परा अब भी जारी रखी है। राज्य पाल के रूप में उन्होंने वर्ष 2014–2015 एवं वष 2015–16 की वार्षिक रिपोर्ट ''राज भवन में राम नाईक'' के रूप में जनता के समक्ष रखा है। यह देश में किसी राज्यपाल द्वारा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत किए जाने का अनूठा उदाहरण है।

7. मेरा श्री राम नाईक जी से परिचय भी पुराना है। पर इस पुस्तक को पढ़कर मुझे भी उनके जीवन के कई रोचक व सरल अनुभव पता चले। पुस्तक में अनेक उद्धरण हैं। कई रोमांचित करते हैं, कई प्रेरित। किसी भी उद्धरण को पढ़ना एक सुखद अनुभव है। उन्होंने अपने संघर्ष और सफलता में अपने माता–पिता, पत्नी एवं अन्य सहयोगियों के योगदान को बहुत सहृदयता से स्वीकारा। सार्वजनिक जीवन की अत्यधिक व्यस्तता के बीच भी उन्होंने अपने परिवारजनों, मित्रों एवं रिश्तेदारों के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बखूबी निर्वहन किया। उन्होंने बहुत सहजता से स्वीकारा है कि उनके व्यक्तित्व को गढ़ने में मातृ–शक्ति का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सांसद एवं मंत्री रहते हुए भारतीय जनसंघ की पहली पीढ़ी तथा उम्र में उनसे बड़ी आदरणीय सुमतिबाई सुकलीकर, पुणे की मालतीबाई परांगपे जी, राजमाता विजयाराजे सिंधिया का उन्हें सदैव स्नेह एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

8. अपने पिता की मृत्यु के बाद जब मुम्बई आए तो उनके पिता के एक मित्र की पत्नी उमा चाची ने उन्हें मुम्बई में अपने घर में रखा और उनकी चाची की सलाह कि मुम्बई में चाय के लिए मना नहीं करो, चाय पीने की आदत डालो, क्योंकि सब दूध नहीं दे सकते। इस वाकिये ने प्रेम से उन्हें एक और सीख दी कि छोटी–छोटी बातों पर दूसरों का विचार करो। कुष्ठ रोगियों और मछुआरा बहिनों के उत्थान के लिए उनके द्वारा किए गए विभिन्न प्रयत्नों को इस पुस्तक के माध्यम से भली–भांति पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

9. वह यह स्वीकारते हैं कि 55 साल के वैवाहिक जीवन में उनकी भार्या श्रीमती कुंदा ताई के सान्निध्य से उनमें महिलाओं को समझने व उनकी समस्याओं की ओर देखने का दृष्टिकोण परिपक्व हुआ। वे समाज में महिलाओं की स्थिति को लेकर बहुत संवेदनशील हैं एवं हमेशा उनके सशक्तिकरण की दिशा में सोचते हैं।

10. वे मन–वचन और कर्म से दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के सिद्धान्तों में विश्वास रखते हैं एवं सभी के उत्थान में ही अपना उत्थान समझते हैं। दूसरों के कष्टों को दूर करने के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं।

11. एक संसदविद के रूप में लोक लेखा समिति हो या प्रतिभूति घोटाले की संयुक्त समिति हो, महिला सशक्तीकरण समिति हो या रेलवे कन्वेन्शन कमेटी हो, इन समितियों के चेयरमैन के रूप में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। उन्होंने लोकसभा के पीठासीन अधिकारियों के पैनल के सदस्य के रूप में भी लोक सभा की कार्यवाहियों का गरिमापूर्वक संचालन किया है।

12. **He also introduced, in the capacity of Private Member, a Bill for 'Promotion of Breast Feeding and Ban on Advertisements of Baby Foods'. The Bill was later on adopted by the Government and then it was passed by the Parliament to became an Act.**

13. संसद में संसदीय सत्र के प्रारंभ में ''जन–गण–मन'' एवं समापन के अवसर पर ''वंदे मातरम्'' की पहल को उन्होंने ही प्रारंभ किया था तथा इस आशय का प्रस्ताव देकर एवं कार्य मंत्रणा समिति के माध्यम से अनुमोदित कराकर उन्होंने यह परम्परा स्थापित की। सांसदों को मिलने वाली सांसद निधि की पहल और प्रारंभिक प्रस्ताव भी राम नाईक जी ने ही दिया था और आज यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सांसदों के लिए जनाकांक्षाओं को पूरा करने का बहुत महत्वपूर्ण साधन बन गया है।

14. मैं श्री राम नाईक जी को इस अवसर पर बधाई देती हूँ कि उन्होंने अपने जीवन में **''लोकल से लाल बत्ती तक के सफर में''** सभी महत्वपूर्ण, रोचक व प्रेरणादायी प्रसंगों को इस पुस्तक में बहुत सुरुचिपूर्वक वर्णन किया है। उन्होंने न केवल जिन्दगी को यथार्थ में जिया बल्कि मौका मिलने पर उस अवस्था में बदलाव लाने का प्रयत्न भी किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने मुम्बई उपनगरीय रेलयात्रियों के कल्याण के लिए वर्ष 1964 में गोरेगांव प्रवासी संघ की स्थापना की थी ताकि रेलयात्रियों को सुव्यवस्थित रेल सेवा एवं सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके।

15. बाद में, जब वे रेल राज्य मंत्री बने तो उन्होंने सर्वप्रथम 1998 में मुम्बई रेल विकास निगम की स्थापना करवाई जो वर्तमान में मुम्बई के दैनिक रेलयात्रियों के लिए बेहतर रेल परिवहन सुविधाएं की व्यवस्था कर रहा है। उन्होंने ही सर्वप्रथम **''विशेष महिला लोकल ट्रेन''** चलवाई जिससे महिलाओं को यात्रा में सुविधा हो। यहां तक नई ट्रेनों के नामकरण में रेल यात्रियों से सुझाव लेने का कार्य भी सर्वप्रथम उन्होंने ही आरंभ करवाया था। बॉम्बे का नाम मुम्बई करवाने में भी उन्होंने अग्रणी भूमिका अदा की।

16. जब उन्होंने भारत सरकार में पेट्रोलियम मंत्री का कार्यभार संभाला तो उस समय एल.पी.जी. की वेटिंग लिस्ट लगभग 1 करोड़ 10 लाख थी। उन्होंने शीघ्र ही सारे लोगों को एल.पी.जी के कनेक्शन मांग पर जारी किए। उन्होंने ग्रामीण एवं शहरों के गरीब उपभोक्ताओं के लिए 5 किलो के एलपीजी गैस सिलेंडर की व्यवस्था भी की। सर्वप्रथम,

उनके ही कार्यकाल में पेट्रोल में 10 प्रतिशत एथेनॉल मिलाकर ईंधन उपलब्ध करवाया गया ताकि ईंधन संसाधनों की वृद्धि की जा सके। 1999 में कारगिल युद्ध में लड़ने वाले एवं शहीद हुए सैनिकों के परिवारों एवं संसद पर हमले में शहीद हुए परिवारों को भी पेट्रोल पम्प का आवंटन किया गया। वह एकमात्र ऐसे पेट्रोलियम मंत्री हैं जिन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया है।

17. श्री राम नाईक जी एक प्रखर राष्ट्रवादी हैं। वे अंडमान में सैलूलर जेल को तीर्थस्थल कहते हैं और उनकी वहाँ की प्रथम यात्रा का विवरण (जहाँ पहली बार वो अपने परिवार के साथ गए थे) हर व्यक्ति की आँख को नम कर देगा। वहाँ लता जी की आवाज में वीर सावरकर की कविता ''ने मजसी ने परत मातृभूमिला (हे सागर! मुझे मेरी मातृभूमि वापस ले चलो) भूमिला'' सुना और 4–5 मिनट में ही सावरकर जी की सेल में रहने पर पसीना–पसीना हो गए।

18. मुझे विश्वास है कि चार भाषाओं, यथा हिन्दी, अग्रेजी, गुजराती और उर्दू में प्रकाशित इस पुस्तक के माध्यम से अधिक से अधिक पाठकगण उनके जीवन के प्रेरणादायी व्याख्यानों से प्रेरित होंगे। यह भी आशा करती हूं कि पुस्तक प्रकाशन के अपने उद्‌देश्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध होगा। इसके साथ ही, मैं श्री राम नाईक जी के सुदीर्घ व स्वस्थ जीवन की कामना करती हूँ।

धन्यवाद।

——————